रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

विपुल ज्ञान का भंडार है संस्कृत, कविराज राजषेखर की साहित्य साधना है विशिष्ट–कुलपति प्रो. मिश्र
रादुविवि में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर समारोह का गरिमामय समापन

जबलपुर 31 मार्च। संस्कृत भाषा की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वह व्यष्टि से समष्टि को तथा परमेष्टि को जोड़ती है। उसकी प्रत्येक प्रार्थना में विश्व बंधुत्व की भावना व्याप्त है। जो विपुल ज्ञान भंडार संस्कृत में है, उसे देश की प्रगति और मानवता के कल्याण के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। कविराज राजषेखर संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे और उन्होने यहीं त्रिपुरी की भूमि को अपनी कर्मभूमि बनाकर संस्कृत भाषा में अमर साहित्य का सृजन किया। उपरोक्त जानकारी माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने अखिल भारतीय राजशेखर समारोह एवं शोध संगोष्ठी के अंतिम दिवस आयोजन की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

कालिदास संस्कृत अकादमी मप्र संस्कृति परिषद्, उज्जैन द्वारा संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के सहयोग में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर के अंतिम दिवस विवि समिति कक्ष में शोध संगोष्ठी चतुर्थ सत्र 'राजशेखर साहित्य में पात्र योजना' विषय पर आयोजित हुआ। प्रो. ललित कुमार गोड़ की अध्यक्षता में हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. रविशङ्कर पाण्डेय, वाराणसी ने अपने उद्बोधन में कविराज राजशेखर की कृतियों के शास्त्रीय महत्त्व को उद्घाटित करते हुए, राजशेखर जी के कृतित्व और आचार्यत्व को संस्कृत साहित्य की बहुमूल्य निधि बताते हुए संस्कृत साहित्य में उनके महत्त्व को निरूपित किया। शोध संगोष्ठि के चतुर्थ सत्र में कार्यक्रम संयोजक तथा संस्कृत विभाग के आचार्य तथा अध्यक्ष प्रो राधिका प्रसाद मिश्र ने संस्कृत और संस्कृति को अन्योन्याश्रित बताया और कहा कि संस्कृत के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं को जा सकती। भारतीय संस्कृति की रक्षा तथा इसके महत्त्व के विकास के लिए संस्कृत भाषा के विकास प्रचार प्रसार हेतु प्रयास करना चाहिए। प्रो ललित कुमार गौड़ ने अध्यक्षीय उद्बोधन में राजशेखर साहित्य परंपरा को अद्वितीय तथा अतुलनीय बताते हुए पठित शोध पत्रों की समीक्षा भी की। सत्र का संचालन डॉ. अखिलेष मिश्र एवं आभार प्रदर्षन डॉ. अजय मेहता ने किया। इस सत्र में शोधपत्रों का वाचन डॉ. साधना जनसारी, डॉ. सचिनदेव द्विवेदी, डॉ. रामेश्वर झारिया, डॉ. संध्या दावडे, डॉ. सरिता यादव, डॉ. शिवचंद्र बल्के, डॉ. जया शुक्ला, डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र द्वारा किया गया।

समापन सत्र का आयोजन –

अखिल भारतीय राजशेखर समारोह के समापन कार्यक्रम का आयोजन षासकीय महाकोशल कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर में आयोजित हुआ। समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विवि संस्कृत विभाग के पूर्व आचार्य डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्विवेदी, कार्यक्रम अध्यक्ष प्राचार्य महाकौशल महाविद्यालय डॉ. प्रभा पुरवार, विशिष्ट अतिथि प्रो. राजेश्वर प्रसाद मिश्र कुरूक्षेत्र, सारस्वत अतिथि डॉ. दिव्यचेतन ब्रह्मचारी, वाराणसी एवं कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन के डॉ. अजय मेहता एवं कार्यक्रम समन्वयक एवं संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

रादुविवि के विभागाध्यक्ष प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र मंचासीन रहे। संचालन डॉ. रामेश्वर झारिया एवं आभार प्रदर्शन समारोह संयोजक संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग रादुविवि के विभागाध्यक्ष प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र ने किया। इस मौके पर विवि संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग के अतिथि विद्वान डॉ. साधना जनसारी, डॉ. अखिलेश मिश्र, डॉ. सरिता यादव, डॉ. जया शुक्ला, पं. रामफल शर्मा, विनोद तिवारी आदि की उपस्थिति रही।

पुरस्कृत हुए प्रतिभाशाली विद्यार्थी–

अखिल भारतीय राजशेखर समारोह के समापन कार्यक्रम में आयोजन संयोजक प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र ने बताया कि समापन कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा समारोह में आयोजित पूर्वरंग स्पर्धाओं के विजेता प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को नगद पुरस्कार प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। इनमें भाषण प्रतियोगिता में कु. आर्या तिवारी शा. मानकुंवर महिला कॉलेज प्रथम, रामनिवास गर्ग लोकनाथ शास्त्री संस्कृत महा. द्वितीय एवं सांभवी भनोत, सेन्ट अलॉयशियस कॉलेज तृतीय स्थान व करन तिवारी, श्रीजानकीरमण कॉलेज को सांत्वना पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इसी तरह श्लोकपाठ प्रतियोगिता में प्रथम–हरिराम ब्रहार, शा. महाकोशल महा., द्वितीय–आर्या तिवारी शा. मानकुंवर बाई महा., तृतीय–देवकी सिंह ठाकुर, रानी दुर्गावती विवि एवं सांत्वना पुरस्कार–मुकुल पाठक नगर निगम शास्त्री महा., मोनू मालवीय, शास. महाकोशल महा. को प्रदान किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता विषय 'राजशेखर के नायक' के लिए प्रथम मोहिती पासी, मातागुजरी महिला महा, द्वितीय हरप्रीत कौर, मातागुजरी महिला महा., तृतीय स्नेहा प्रजापति, मातागुजरी महिला महा. को पुरस्कृत किया गया।